दिनांक : .../११/२०१९

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा संचालित
श्री योग वेदांत सेवा समिति, ...
सम्पर्क : ----------

श्रीमद्भगवद्गीता जयंती व तुलसी पूजन कार्यक्रम

प्रेरणास्रोत : संत श्री आशारामजी बापू

प्रति,
प्रधानाचार्य/प्रभारी

विषय : श्रीमद्भगवद्गीता जयंती (८ दिसम्बर) व तुलसी पूजन दिवस (२५ दिसम्बर) के निमित्त दिनांक ..... को विद्यालय में कार्यक्रम आयोजन हेतु अनुमति प्रदान करने के संदर्भ में।

महोदय,

सप्रेम सादर नमस्कार !

सारे वेदों, उपनिषदों का अमृत सरल भाषा में जिस ग्रंथ में है और जिसमें सभी देशों, जातियों, पंथों के मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है ऐसा ग्रंथ है श्रीमद्भगवद्गीता। विद्यार्थियों के लिए तो यह भावी जीवनरूपी इमारत की नींव को सुदृढ़ बनानेवाली संहिता ही है। इसका अध्ययन, अनुसरण कर हर कोई अपना वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल, सफल बना सकता है। आज गीता देश-विदेश में पाठ्यक्रमों का अंग बनती जा रही है। विश्व के श्रेष्ठतम प्रबंधकीय संस्थानों में 'गीता' पढ़ायी जा रही है। विदेश की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में वरिष्ठ अधिकारियों को गीता का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे उनकी कार्यकुशलता में वृद्धि हुई है।

विद्यार्थी गीता की महत्ता समझकर उसका स्वाध्याय करें, जिससे उनके जीवन में साहस, सफलता, समता, शांति और धर्म आदि दैवी गुण विकसित हों। इस उद्देश्य को लेकर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से विद्यालयों में गीता जयंती के निमित्त कार्यक्रम किया जाता है। पिछले वर्षों में जिन विद्यालयों में यह कार्यक्रम हुआ वहाँ के लोगों ने इसे खूब सराहा है और विद्यार्थियों के जीवन पर इसका अच्छा प्रभाव देखने को मिला है।

मन को स्वस्थ एवं सुयोग्य बनाने में गीता एवं तन को स्वस्थ रखने में तुलसी बहुत ही उपयोगी है। शास्त्रों में कहा गया है : 'संसारभर के फूलों और पत्तों से जितने भी पदार्थ या दवाइयाँ बनती हैं, उनसे जितना आरोग्य मिलता है उतना ही आरोग्य तुलसी के आधे पत्ते से मिल जाता है।' इसलिए हमारी संस्कृति में हर घर-आँगन में तुलसी लगाने की परम्परा रही है।

पाश्चात्य अंधानुकरण के चलते समाज में चिंता, तनाव, अशांति एवं विभिन्न शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। इन सबसे बचने का सरल उपाय है कि लोग 'गीता-ज्ञान' एवं तुलसी की महत्ता समझें, भारतीय संस्कृति व संतों-महापुरुषों के ज्ञान का आश्रय लें।

विश्व में सुख, सौहार्द, स्वास्थ्य, शांति से जन-जन का जीवन मंगलमय हो, इस लोकहितकारी उद्देश्य से पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की पावन प्रेरणा से २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' मनाने की पहल की गयी। नियमित तुलसी के पत्ते खाने से विद्यार्थियों की स्मरणशक्ति में वृद्धि होती है। तुलसी-पूजन से विद्यार्थियों में बुद्धिबल, आरोग्यबल, मनोबल व चारित्र्यबल बढ़ेगा जिससे उनके जीवन का सर्वांगीण विकास होगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप गीता जयंती एवं तुलसी पूजन कार्यक्रम के दिव्य आयोजन में अपना योगदान अवश्य देंगे। आपका सहयोग विद्यार्थियों को सुसंस्कारी बनाने व उनके स्वास्थ्य व चरित्र की रक्षा एवं देश की उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

आभार सहित,
भवदीय